बिहार इतिहास खण्ड – 1

बिहार का प्राचीन इतिहास

पाषाण युग स्थल

- पुरापाषाणी स्थलों (पेलियोलिथिक साइट्स) की खोज मुंगेर और नालंदा से की गई है।
- मध्यपाषाण स्थलों (मेसोलिथिक साइट्स) की खोज हजारीबाग, रांची, सिंहभूम तथा संथल परगना (सभी झारखंड में) से की गई है।
- नव पाषाण (निओलिथिक) (2500–1500 ईसा पूर्व) कलाकृतियों की खोज चिरांद (सरण) और चेचर (वैशाली) से की गई है।
- चिरांद (सरण), चेचर (वैशाली), चंपा (भागलपुर) तथा तारदीह (गया) से ताम्रपाषाण युग की कुछ वस्तुएं प्राप्त हुईं हैं।

महाजनपद

- वैदिक युग में बाद में कईं छोटे राज्यों का उदय हुआ। 16 साम्राज्यों तथा गणराज्यों को महाजपद के रूप में जाना जाता है, जो भारत–गंगा मैदानों में फैले हुए हैं। वे निम्नानुसार हैं :

1. काशी	2. कम्बोज	3. कौशल	4. गांधार
5. अंग	6. अवंती	7. मगध	8. अस्मक
9. वज्जि (वृजि)	10. सुरसेन	11. मल्ल	12. मत्स्य
13. चेदि	14. पांचाल	15. वत्स (वामसा)	16. कुरू

- तीन महाजनपद नामतः मगध, अंग तथा वज्जि बिहार में थे।

अंग राज्य

- इसका उल्लेख पहली बार अथर्ववेद में किया गया है।
- वर्तमान में इसमें खगरिया, भागलपुर तथा मुंगेर शामिल हैं।
- यह मगध साम्राज्य के उत्तर–पूर्व में स्थित था।
- चंपा (वर्तमान में भागलपुर) राजधानी थी।
  - ➢ इसे राजा महागोविंद द्वारा स्थापित किया गया था।
  - ➢ इसे चेनांपो (हयून त्सांग द्वारा) तथा मालिनी भी कहा जाता था।

वज्जि राज्य

- इसमें आठ वंश निहित थे।
- सबसे महत्वपूर्ण वंश लिछावी, विदेह तथा जनात्रिक थे।
- यह उत्तर भारत में स्थित था।
- वज्जि की राजधानी वैशाली में स्थित थी।
- इसे विश्व का पहला गणतंत्र माना जाता था।

लिछावी वंश

- यह वज्जि संधि में सबसे शक्तिशाली वंश था।
- यह गंगा तथा नेपाल के उत्तरी तटों पर स्थित था।
- इसकी राजधानी वैशाली में स्थित थी।
- भगवान महावीर का जन्म कुंडग्राम, वैशाली में हुआ था। उनकी माता लिछावी की राजकुमारी थीं (राजा चेतक की बहन)।
- उन्हें बाद में हर्यंक वंश के अजातशत्रु द्वारा मगध साम्राज्य में शामिल कर लिया गया था।
- बाद में गुप्त सम्राट चंद्रगुप्त ने लिछावी की राजकुमारी कुमारादेवी से विवाद कर लिया।

जनात्रिक वंश

- भगवान महावीर इस वंश से संबंधित थे। उनके पिता इस वंश के प्रमुख थे।

विदेह वंश

- इसका उल्लेख पहली बार यजुर्वेद में किया गया है।
- इस राज्य की शुरूआत इच्छावांकु के पुत्र निमी विदेह द्वारा की गई थी।
- मिथिजनक विदेह ने मिथिला की स्थापना की।
- राजा जनक की पुत्री देवी सीता इस वंश से संबंधित थीं।
- जनकपुर (अब नेपाल में) इस राज्य की राजधानी थी।

मगध राज्य

- इसका उल्लेख पहली बार अथर्ववेद में किया गया है।
- यह उत्तर में गंगा से दक्षिण में विंध्या तक, पूर्व में चंपा से पश्चिम में सोन नदी तक विस्तारित है।
- इसकी राजधानी गिरीवृज या राजगीर थी जो पांच पहाड़ों द्वारा सभी ओर से पहाड़ों से घिरी हुई थी।
- बाद में राजधानी को पाटलिपुत्र स्थानांतरित कर दिया गया था।
- इसने बौद्ध धर्म तथा जैन धर्म के विकास में एक महत्वपूर्ण भूमिका अदा की।
- भारत के दो महान साम्राज्यों अर्थात् मौर्य और गुप्त का उदय मगध में हुआ।

मौर्य पूर्व राजवंश

बृहधृथ राजवंश

- बृहधृत को पहले मगध के राजा के रूप में जाना जाता था। वह चेदि के कुरू राजा वासु के बड़े पुत्र थे।
- उनके नाम का उल्लेख श्रग्वेद में किया गया है।
- बृहधृत का पुत्र जरासंध सबसे प्रसिद्ध राजा था।
- गिरीवृज (राजगीर) जरासंध के अधीन एक राजधानी थी।
- प्रोदयोत राजवंश मगध में बृहधृत राजवंश के उत्तराधिकारी थे।

हर्यक राजवंश – 544 ईसा पूर्व से 492 ईसा पूर्व

बिम्बिसार

- इन्होंने राजवंश की स्थापना की। यह बुद्ध के समकालीन थे।
- इन्होंने अपनी राजधानी राजगीर में स्थापित की।
- इन्होंने अपने साम्राज्य का विस्तार वैवाहिक संबंधों के माध्यम से किया था जिसका उदाहरण कोशल राज्य है।
- वह स्थायी बलों/सेना बनाने के लिए इतिहास में पहला शासक भी था।

अजातशत्रु

VEDANGA

- इन्होंने अपने पिता बिंबिसार को अगला शासक बनने के लिए मार दिया।
- भगवान बृद्ध ने महापरिनिर्वाण प्राप्त किया और भगवान महावीर ने भी इसके शासनकाल के दौरान मोक्ष प्राप्त किया।
- पहली बौद्ध परिषद (483 ईसा पूर्व) राजगीर में इनके संरक्षण के तहत आयोजित की गई थी।

उदायिन

- इसने भी अगला शासक बनने के लिए अपने पिता अजातशत्रु की हत्या की।
- इसने गंगा और सोन नदियों के संगम पर पाटलीपुत्र शहर की स्थापना की और इसे अपनी राजधानी बनाया।

शिशुनाग राजवंश – 412 ईसा पूर्व से 344 ईसा पूर्व

शिशुनाग

- यह राजवंश के संस्थापक थे। यह बनारस के वायसराय थे।
- इस समय के दौरान मगध की दो राजधानियां अर्थात् राजगीर और वैशाली थी।
- आखिरकार इन्होंने अवंती के प्रतिरोध को समाप्त करके 100 वर्ष की प्रतिद्वंद्विता को खत्म कर दिया।

कालाशोक

- इन्होंने अपनी राजधानी को पाटलीपुत्र स्थानांतरित किया और यह आगे मगध साम्राज्य की राजधानी के रूप में जारी रहा।
- वैशाली में दूसरी बौद्ध परिषद (383 ईसा पूर्व) का आयोजन इनके संरक्षण के तहत किया गया था।

नंद राजवंश – 344 ईसा पूर्व से 321 ईसा पूर्व

- महापदमानंद ने अंतिम शिंशुनाग शासक नंदीवर्धन की हत्या के बाद राजवंश की स्थापना की।
- महाबोधिंसत्व में, उन्हें उग्रसेन कहा जाता था।
- धनानंद इस वंश के अंतिम शासक थे और अलेक्जेंडर के समकालीन थे।

VEDANGA